>

Title: Power Shortage in Delhi.

श्रीमती कृष्णा तीरथ (करोलबाग) : अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देती हूं। आज दिल्ली में बिजली की समस्या से लोग जूझ रहे हैं और वे बहुत ही पीड़ित और दुखी हैं। दिल्ली में इस समस्या से आम आदमी बहुत परेशान है। दिल्ली में यह हालत है कि जो कम्पनियां यहां आई हैं, चाहे वह बी.एस.ई.एस. यमुना हो, बी.एस.ई.एस. राजधानी या एन.डी.पी.एल. हो, मुझे ऐसा लगता है कि ईस्ट इंडिया कंपनी की तरह ये कंपनियां यहां आई और इन्होंने दिल्ली के सारे निवासियों को इन्होंने इस तरह से दुखी किया है कि वे त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। दिल्ली के चारों ओर स्लम वाले इलाके हैं, झुग्गी कलस्टर्स हैं या पॉश कालोनीज हैं। उनमें हर जगह या तो बिजली पूरी नहीं आती है और यदि कुछ जगहों पर पूरी बिजली आती भी है तो बिजली की जो दरें बढ़ी हैं, उस दर के कारण इतने बड़े-बड़े बिल आते हैं कि लोग उन्हें भरने में अपने आपको असहाय पा रहे हैं। ईस्ट इंडियन कंपनी की तरह अम्बानी ग्रुप ने अपनी दो कंपनिया लाकर लोगों के जो मीटर लगाये गये हैं और जिस तरह से वे चलते हैं, उसके कारण आम आदमी, जो छोटा कर्मचारी है, छोटा दुकानदार है, वह दिन भर में जितना कमाता नहीं है, उससे ज्यादा का बिल देने में उसे परेशानी होती है[b23][b24]। [r25] मुझे ऐसा लगता है कि वर्ष 2002 में इस कंपनी ने इस कार्यभार को संभाला था।...(व्यवधान)

श्री श्रीचन्द कृपलानी (चित्तौड़गढ़): क्या आप अपनी ही सरकार की बुराई कर रही हैं?...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप क्या कर रहे हैं? Shri Kriplani, you are already a senior Member.

...(व्यवधान)

श्रीमती कृष्णा तीरथ : मैं सरकार की बुराई नहीं कर रही हूं। मैं बिजली वालों की बात कर रही हूं। इससे पहले डीवीबी या डेसू कंपनी थी,...(व्यवधान) लगता है कि उन्होंने आप लोगों को भी खरीद रखा है। अपोजीशन इसलिए नहीं बोलती क्योंकि आप लोगों के मुंह इस वजह से बंद हैं।...(व्यवधान) जो बीस-बीस साल पहले के बिल हैं, वे लोग हरेक बिल के पीछे पुराने बिल लगाकर उसमें एरियर मांगना चाहते हैं। इस बात से आम आदमी बहुत दुखी है और आम आदमी के बारे में जगह-जगह चोरी की बात करके, जैसे अगर उसके घर में कुछ मशीनें रखी हैं, उन मशीनों को उसके घर में दिखाते हैं कि ये आपके घर में यूज होती हैं। हर घर में यह कहर उन्होंने ढाया है कि अंदर जाने के बाद प्वाइंट्स गिनते हैं। अगर एक घर पुराना है और उसमें एक वृद्ध लेडी भी रहती है तो उसके घर में पचास प्वाइंट्स होंगे तो उसे पूरा का पूरा बिल लगाकर भेजते हैं। मेरा कहना यह है कि जिन कंपनियों ने आने के बाद यहां हमारा इतना बड़ा इंफ्रास्ट्रक्चर लिया, इतने बड़े-बड़े ऑफिसेज लिये, उसकी तो कोई बात नहीं है लेकिन वे बिजली की दरें दिन-प्रतिदिन बढ़ाना चाहती हैं।

दूसरी तरफ मैं कल एक अखबार में पढ़ रही थी कि इनके मुताबिक पांच साल में बिजली की दरें 38 फीसदी बढ़नी थीं लेकिन इनका कहना यह है कि अभी कोवल 16 फीसदी ही बढ़ी है। अगर 16 फीसदी में आम आदमी इतना दुखी है तो 38 फीसदी में दिल्ली के हालात क्या होंगे? आम आदमी पर इसका बोझ न पड़े, उसके लिए सरकार 50-50 फीसदी सब्सिडी दे रही हैं। मेरा मानना यह है कि इन कंपनियों पर चैक लगाई जाए या जो पुराना तरीका था, डीवीबी या डेसू जो थीं, उनको काम सौंपा जाए जिससे आम आदमी को इसमें राहत मिले और जो बिल बढ़कर आ रहे हैं, वे बिल बढ़कर न आएं। इतना बिल आए जिसे आम आदमी भर सके और बिजली पा सके।...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Prof. Vijay Kumar Malhotra associates with the issue raised by Shrimati Krishna Tirath.

...(*Interruptions*)